एक लोककथा

दिल्ली की गप्प

एक थो दिली को पेलवान। बाहे अपनी ताकत पे भोत गुमान थो। बाने भोत सारे दंगल जीते थे। दिल्ली के असफेर कोई पेलवान नई बचो थो, जो बासे कुश्ती लड़े। एक दिन बाहे पता चलो कि आगरा में एक पेलवान है बो भोतई ताकतवर है लेकिन वो कुश्ती लड़वे बाहर नई जात थो। तो दिल्ली के पेलवान ने सोची मैं खुद जाके आगरा के पेलवान से कुश्ती लड़हूँ।

बाने दो चद्दराँ में सत्तू की दो पुटरियें बाँध लईं। पेलवान ने दोई पुटरियें कँधों पे धरीं और चल दओ। चलत-चलत बाहे गैल में ज़ोर की भूक लगी। तो बाने एक तलाब के किनारे जाके दोई पुटरियें खोल लईं और बो हाथ धोवे तलाब में चलो गओ। इत्ते में बड़े ज़ोर को अन्धूड़ा चलो। पूरो को पूरो सत्तू उड़के तलाब में घुर गओ। पेलवान ने सोची जो अच्छो भओ, सत्तू घोरवे की मुसीबत से बचो। बा सत्तू भरो पूरो तलाब पी गयो। पीवे के बाद बाहे आलस आओ। वो भईं पसरके सो गओ। बई तलाब को पानी पास के जंगल के हथ्थी पियत थे। हथ्थी जब पानी पीवे आए तो तलाब खाली डरो थो और उतई पेलवान सो रओ थो। प्यासे हथ्थी गुस्सा में आके पेलवान हे कुचलन लगे। पेलवान हे नींद में लगो बाके ऊपर कीड़ा चल रए हैं। बो उन्हें उठा-उठाके फेंकन लगो। वे हथ्थी दूसरे पेलवान के आँगन में जाके गिरन लगे।

जब पेलवान की नींद पूरी हो गई तो वो दूसरे पेलवान के घर चल दओ। बाने पेलवान के घर पोंच के देखो एक छोटी मोड़ी हथ्थियों हे झड़ा-झड़ा के आँगन के बाहर फेंक रई है। पेलवान ने मोड़ी से पूछो, "काये मोड़ी तेरा बाप कहाँ है?" मोड़ी ने कहा, "बब्बा तो सौ गाड़ी बाँध के जंगल लकड़ी लावे गओ है।" पेलवान ने सोचो, अच्छो मौका है जंगल में जाकेई कुश्ती लड़ हूँ। वो चल दओ जंगल। बई रस्ता से दूसरो पेलवान लकड़ी लदी गाड़िएँ खेंच के ला रओ थो। पेलवान एक खोह में छुप गओ और आखिरी गाड़ी नईं खिचीं तो बाने पीछे आके देखो और पेलवान से कई, "काए भाई का बात है?" दूसरो पेलवान भी कुश्ती लड़वे तैयार हो गओ। लेकिन एक बाधा आन खड़ी भई – हार-जीत को फेसलो कौन करहे? इत्ते में गैल से एक डुकरिया आत दिखी। बा अपने मोड़ा के लाने खेत में रोटी देवे जा रई थी। पेलवानों ने बासे अपनी बात कही। डुकरिया बोली, "मैं तुमरी कुश्ती को फैसला कर तो देती लेकिन अबे मोहे बड़ी उलात है। मेरा मोड़ा खेत में भूखो हुए। वाहे रोटी देवे जा रई हूँ। जासे मैं तुमरी कुश्ती देखवे रुक नई सकूँ।" जा सुनके पेलवान दुखी

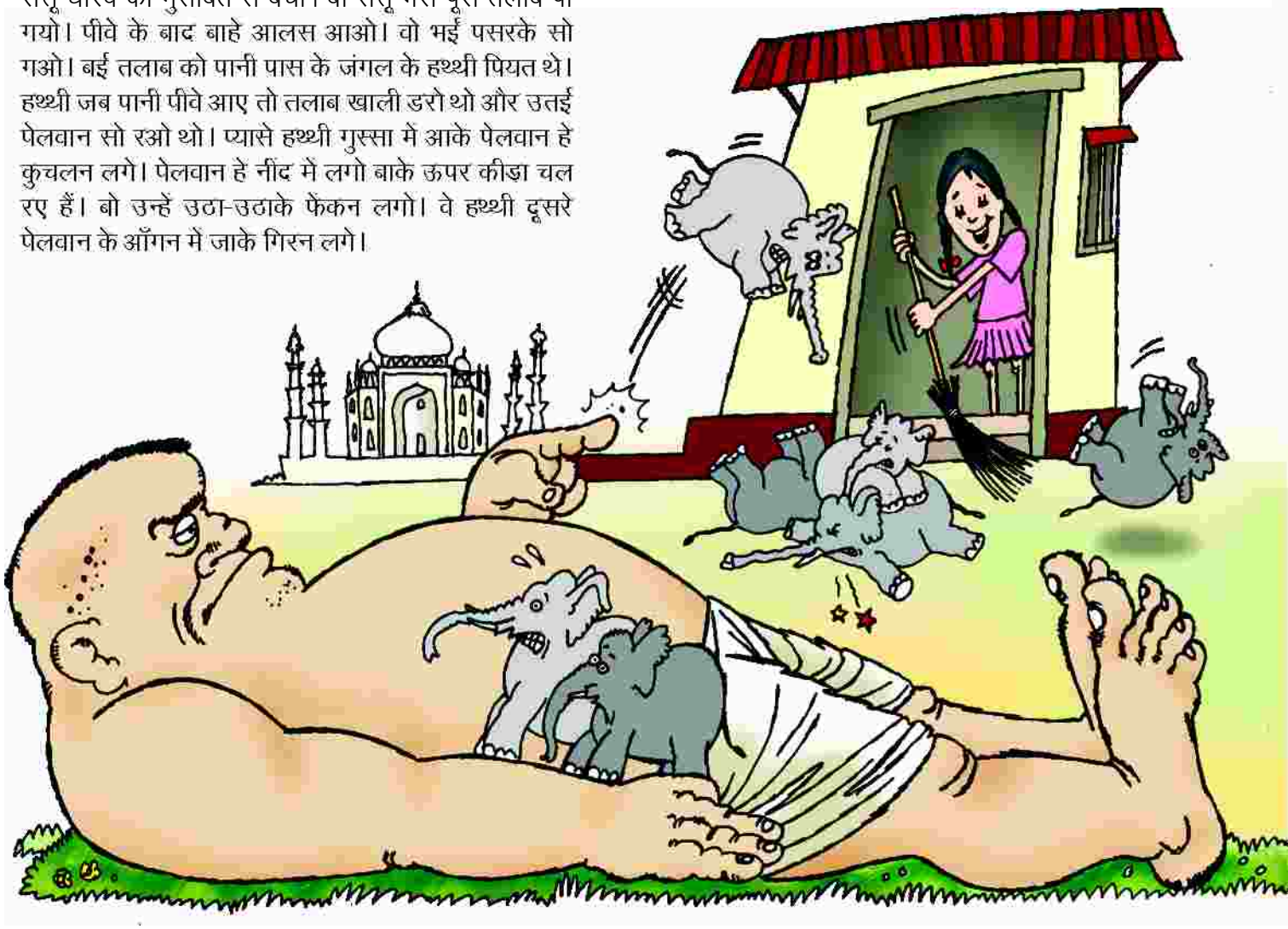

हो गओ। डुकरिया बिन्हें दुखी देखके बोली, "ऐसो करो, तुम दोई जने मेरी हथेली पे कुश्ती लड़त चलो मैं चलत जेहूँ और तुमरी कुश्ती भी देखत जेहूँ।" दोई पेलवान राजी हो गए और डुकरिया की हथेली पे कुश्ती लड़न लगे। डुकरिया सौ कदम धरके सौ कोस दूर खेत में पोंच गई। उते बाको मोड़ा कुदाली से जल्दी-जल्दी खेत खोद रओ थो। बासे खूब धूरा उड़ रई थी। डुकरिया खेत की मेड़ पे पोंची तो बाकी नाक में धूरा जाबे से पेलवान बाकी हथेली से उड़ गए। एक गिरो दिल्ली में तो दूसरो जाके गिरो आगरा में। दोई की हड्डी-पसलिएँ टूट गईं।

कार्मे बर्नो दे काज़ो | अनुवादः राजेश जोशी

गधे की प्रार्थना

ओह ईश्वर
किसने बनाया मुझे
सड़क पर हर वक्त घसीटने के लिए
भारी बोझ ढोने के लिए हर वक्त
और हर वक्त पीटे जाने के लिए।
साहस और दयालुता दो मुझे
कोई दिन हो कि मुझे कोई समझ सके
कि मैं और अधिक रोना नहीं चाहता
क्योंकि मैं कभी नहीं कह सकता
जो मैं सोचता हूँ
और वे हर वक्त मेरा मज़ाक उड़ाते हैं
रसीली काँटेदार भटकैया पाने दो मुझे
उन्हें बताओ और वक्त दो मुझे उठाने का

बैल की प्रार्थना

प्यारे ईश्वर!
वक्त दो मुझे
बहुत हड़बड़ी में रहता है हर वक्त आदमी
समझाओ उसे कि इतनी जल्दी
नहीं कर सकता मैं
वक्त दो मुझे जुगाली के लिए
वक्त दो पाँव घसीटने को
सोने के लिए वक्त दो
वक्त दो सोचने के लिए